**सो पेहेचान अब होएसी, करसी साफ दुनी दिल।**
**किताब याही रसूल की, सुख लेसी सब मिल।। २२ ।।**

अब इमाम मेंहदी की सनन्ध किताब से कुरान के सारे रहस्य खुल जाएंगे और दुनियां के दिलों के सारे संशय मिट जाएंगे। तब सब दुनियां मिलकर इस वाणी का सुख लेगी।

**सब्द रसूल के पसरसी, तिन फिरसी वैराट।**
**अकस सबों का भान के, सब चलसी एक बाट।। २३ ।।**

श्री प्राणनाथजी की वाणी सारे ब्रह्माण्ड में फैलेगी। यह सबके धार्मिक झगड़ों को मिटाकर एक पारब्रह्म के पूजक बनाएगी।

**छोड़ गुमान सब मिलसी, ए जो देखत हो जहान।**
**जात पांत न भांत कोई, एक खान पान एक गान।। २४ ।।**

तब सब दुनियां के लोग अपने अहंकार को छोड़कर अपनी जाति-पाति और खान-पान के भेद भूलकर एक रास्ते पर आ जाएंगे।

**एही सब्द सुन जागसी, बड़ी बुध होसी विचार।**
**याही सदी आखिर की, हक सुख देसी पार।। २५ ।।**

इस वाणी को सुन करके सब जागृत बुद्धि (असराफील) के बारे में सोचेंगे। यही सदी (शताब्दी) आखिरी होगी जिसमें श्री राजजी महाराज सबको बेहद का सुख देंगे।

**नूर सबों में पसरया, सो कहूं सब सनंध।**
**याही सब्दों बीच का, उड़ जासी बंध फंद।। २६ ।।**

सारे संसार में इस वाणी का प्रकाश फैल जाएगा और इसी सनन्ध की वाणी से सब धर्मों के बन्धन उड़ जाएंगे।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ९३१ ।।

## सनन्ध–बिना एक महंमद की

**इत आए करी जो रसूलें, सो नेक कहूं प्रकास।**
**तबक चौदे उजाला, किया तिमर सब नास।। १ ।।**

श्री महामतिजी कहती हैं कि श्री प्राणनाथजी (नूरी रसूल) ने यहां आकर चौदह लोकों (ब्रह्माण्ड) का अन्धकार मिटाकर वाणी का प्रकाश किया। उसका थोड़ा-सा वर्णन करती हूं।

**प्रताप बड़ा महंमद का, जिन दिया सबों को सुख।**
**चौदे तबक की दुनी के, दूर किए सब दुख।। २ ।।**

श्री प्राणनाथजी के प्रताप की महिमा भारी है। इन्होंने सारे संसार के चौदह लोकों के दुःख को दूर करके सबको सुख दिया।

**इमाम मोमिन इस्क, सब मुख एही सब्द।**
**सब्द ना कोई दूसरा, बिना एक महंमद।। ३ ।।**

संसार के ग्रन्थों में इमाम साहब, मोमिन और इश्क की ही बातें हैं। संसार की जबान बिना एक श्री प्राणनाथजी (महंमद) के और कोई शब्द ही नहीं है।

Nijanand App

**आलम सब अल्लाह की, तामें छोड़ी न काहूं हद।**
**दौड़ के कोई न पोहोंचिया, बिना एक महंमद।।४।।**

रसूल साहब के अलावा अल्लाह के पास कोई नहीं पहुंचा। यह सारा संसार हद 'क्षर' में ही टिका रहा।

**कई जातें दौड़ी जहान में, पर आया न काहूं दरद।**
**तो किनहूं न पाइया, बिना एक महंमद।।५।।**

इस संसार में बहुत से धर्म एवं जातियों ने दौड़ की, पर किसी को खुदा के पाने का दर्द नहीं लगा। वह दर्द रसूल साहब के बिना किसी को नहीं हुआ।

**पंथ पैंडे दीन मजहब, कर कर गए रब्द।**
**पर हुआ न कोई काम का, बिना एक महंमद।।६।।**

दुनियां के दीन (धर्म) आपस में लड़ते रहे, पर कोई भी श्री प्राणनाथजी के बिना पारब्रह्म की पहचान नहीं करा सका।

**बड़े बड़े ग्यानी गुनी मुनी, पर पाया न काहूं हारद।**
**कथ कथ सब खाली गए, बिना एक महंमद।।७।।**

यहां बड़े-बड़े ज्ञानी, मुनि, जिन्होंने अपनी कविताओं में ग्रन्थ-रचनाएं कीं, हुए पर रसूल मुहम्मद के बिना किसी को पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई।

**कई पोथी पढ़ पढ़ पढ़हीं, पर न सुध हद बेहद।**
**मेहेनत सीधी न हुई, बिना एक महंमद।।८।।**

संसार में लोग अनेक ग्रन्थों को पढ़ते रहे, परन्तु उनको हद, बेहद का भी पता नहीं लगा और किसी की मेहनत सफल नहीं हुई। रसूल साहब के बिना पारब्रह्म तक पहुंचने की किसी ने सुध नहीं दी।

**कई जुदी जुदी जिनसों खोजिया, सबों आप अपने मद।**
**तिनसे कछुए न सरया, बिना एक महंमद।।९।।**

कइयों ने अपने ज्ञान के अहंकार से परमात्मा की तरह-तरह से खोज की, परन्तु बिना एक रसूल मुहम्मद के किसी का काम सिद्ध नहीं हुआ।

**कई पढ़े किताबें सहीफे, पर हुआ न काहूं मकसद।**
**बका तरफ किन पाई नहीं, बिना एक महंमद।।१०।।**

कइयों ने बड़े-बड़े ग्रन्थ तथा छोटी-छोटी सन्त वाणी पढ़ी, पर पारब्रह्म की प्राप्ति करने का लक्ष्य किसी का सिद्ध नहीं हुआ। रसूल मुहम्मद के बिना अखण्ड परमधाम तक का रास्ता कोई भी न पा सका।

**कई बंदे एक हादी के, जुदे पड़े कर जिद।**
**पर हक किने न पाइया, बिना एक महंमद।।११।।**

बड़े-बड़े गुरुओं के चेले आपस में लड़ झगड़कर अलग हो गए, परन्तु पारब्रह्म की प्राप्ति मुहम्मद के बिना नहीं हो सकी।

**कई पेहेलवान कहावें दुनी में, ढूंढ़ ढूंढ़ हुए सरद।**
**सुन्य सुरिया पार न ले सके, बिना एक महंमद।।१२।।**

दुनियां में बड़े-बड़े देवता, तीर्थंकर पारब्रह्म को ढूंढ़कर थक गए, किन्तु बिना एक रसूल मुहम्मद के कोई भी सात शून्य (तुरिया सितारा) के आगे नहीं जा सका।

Nijanand App

**कई नाम इमाम धर धर गए, बोल बोल गए बेरद।**
**ठौर कायम किने न पाइया, बिना एक महंमद।। १३ ।।**

कईयों ने अपने आपको इमाम के नाम से घोषित किया और बड़े-बड़े वचन बोले, पर वह व्यर्थ गए। बिना एक रसूल मुहम्मद के अखण्ड ठिकाने का ज्ञान किसी को नहीं मिला।

**बड़े बड़े सुभट सूरमें, पर हुआ न कोई मरद।**
**जो सुध ल्यावे नूर पार की, बिना एक महंमद।। १४ ।।**

इस संसार में बड़े-बड़े पैगम्बर, मठाधीश हुए, किन्तु बिना एक रसूल मुहम्मद के अक्षर के पार की सुध देने वाला कोई नहीं हुआ।

**केतेक पर सिर बांध के, कर कर गए जब्द।**
**सो सारे बेसुध गए, बिना एक महंमद।। १५ ।।**

तप और साधना से कईयों ने बड़ी-बड़ी मान्यताएं प्राप्त कीं, पर बिना एक रसूल मुहम्मद के सभी बेसुध होकर अज्ञान में ही पड़े रहे।

**अंग मार जार उड़ावहीं, जो हते जोर जलद।**
**पर ए सुध काहू न परी, बिना एक महंमद।। १६ ।।**

संयम और हठ योग से तपस्या करने वाले योगियों ने अपने अंगों को बहुत कष्ट दिया, परन्तु परमधाम की खबर सिवाय रसूल मुहम्मद के किसी को नहीं हुई।

**कोई रोते फिरे रात दिन, पर हुआ न दीदार खुद।**
**कौन सुख देवे तिनको, बिना एक महंमद।। १७ ।।**

कई भक्तजन रात-दिन पारब्रह्म के दर्शन के लिए रोते फिरते रहे, परन्तु मलकी मुहम्मद (श्री देवचन्द्रजी) के बिना न तो किसी को साक्षात् दर्शन हुआ और न कोई पारब्रह्म के मिलने का सुख ही दे सका।

**कई लालै लाल कहावते, सो हो गए सब जरद।**
**और लाल कोई न हुआ, बिना एक महंमद।। १८ ।।**

अक्षर की पांच वासनाओं ने तथा और कई साधक तपस्वियों ने पारब्रह्म की प्राप्ति का दावा तो किया, पर सब फीके पड़ गए। एक रसूल मुहम्मद ही पारब्रह्म की सुध देकर 'लाल' कहलाए।

**ए खेल खावंद जो त्रैगुन, कहें हम ही हैं परमपद।**
**और खावंद कोई न हुआ, बिना एक महंमद।। १९ ।।**

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, जो इस ब्रह्माण्ड के मालिक हैं, वह स्वयं को खुदा बताते हैं, पर इमाम मेंहदी स्वरूप श्री प्राणनाथजी के बिना कोई भी पारब्रह्म नहीं है।

**कई वली पैगंमर आदम, ए कहावें सब मुरसद।**
**और मुरसद कोई ना हुआ, बिना एक महंमद।। २० ।।**

संसार में कई बड़े-बड़े वली, कई आलम तथा धर्मगुरु हुए, परन्तु (श्री देवचन्द्रजी) मलकी मुहम्मद के बिना कोई सतगुरु नहीं हुआ।

**औलिए अंबिए फरिस्ते, जेता कोई पैद।**
**पर अलहा किनहूं ना लह्या, बिना एक महंमद।। २१ ।।**

कई औलिए हुए, कई अंबिए, कई फरिश्ते तथा कई भविष्यवाणी करने वाले हुए, परन्तु रसूल मुहम्मद के बिना अल्लाह को किसी ने नहीं पाया।

Nijanand App

**आद मध और अबलों, कोई न पोहोंच्या कद।**
**खुद खबर किन ना दई, बिना एक महंमद।। २२ ।।**

सृष्टि के शुरू से, बीच में और अब तक पारब्रह्म के घर तक कोई पहुंच नहीं पाया। बिना एक रसूल मुहम्मद के किसी ने भी परमात्मा की खबर नहीं दी।

**चौदे तबक की दुनी के, मैं देखे सब कागद।**
**सो सारे ही बंद हुए, बिना एक महंमद।। २३ ।।**

चौदह तबकों (लोकों) की दुनियां के समस्त धर्म ग्रन्थों को हमने देखा, वह सब बेहद का ज्ञान न होने के कारण चुप हो गए (बन्द हो गए), केवल एक मुहम्मद साहब के कुरान ने ही बेहद से पार अक्षर और अक्षरातीत की खबर दी।

**ऊपर तले मांहें बाहेर, ए उड़ जासी ज्यों गरद।**
**सो फेर कायम कौन करावहीं, बिना एक महंमद।। २४ ।।**

ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर जो कुछ भी है आखिरत में धूल की तरह उड़ जाएगा। फिर इन सबको नूरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) के बिना बहिश्तों में कायम (अखण्ड) कौन करेगा?

**जो दुनियां खाकें रल गई, सबों कर डारी रद।**
**सो फेर कौन उठावहीं, बिना एक महंमद।। २५ ।।**

जो लोग कब्रों में पड़े हैं और मिट्टी में मिल गए हैं, इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के बिना उन्हें कब्र से कौन उठाएगा?

**तबक चौदे ख्वाब के, ए खेल झूठा है सब।**
**सो बका कौन करावहीं, बिना एक महंमद।। २६ ।।**

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड सपने का है और झूठा है। इसे नूरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बिना कौन अखण्ड करेगा?

**तत्व सबन को नास है, जाको मूल मोह मद।**
**सो नेहेचल कौन करावहीं, बिना एक महंमद।। २७ ।।**

संसार के सभी तत्व जिनका मूल मोह तत्व है, अहंकार है, नाशवान हैं। उनको नूरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बिना कौन अखण्ड करेगा?

**ऐसा हुआ न कोई होएसी, जो जावे छोड़ सरहद।**
**फुरमान ल्यावे नूर पार का, बिना एक महंमद।। २८ ।।**

ऐसा न कोई हुआ है और न कोई होगा जो क्षर को पार कर अक्षर के पार का ज्ञान बिना एक रसूल मुहम्मद के ला सके?

**पांच चीज जीव सब उड़ गए, मसा बका से ल्याए औखद।**
**सो खिलाए जिवाए कोई ना सक्या, बिना एक महंमद।। २९ ।।**

इस संसार के पांच तत्व और जीव सभी नाशवान हैं, परन्तु श्री देवचन्द्रजी की तारतम वाणी रूपी अखण्ड औषधि को बिना नूरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के कोई खिलाकर जीवित नहीं कर सका।

Nijanand App

**सो रसूल तुम खातिर, होए आया कासद।**
**ए सब मासूक के हुकमें, हुआ जाहेर महंमद।। ३० ।।**

रसूल मुहम्मद तुम्हारे वास्ते कासिद बनकर आए। वही श्री राजजी महाराज के हुकम से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के रूप में प्रगट हुए।

**मोमिन तुम सूते क्या करो, ए कागद ए कासद।**
**काजी कजा पर आइया, दे मुबारकी महंमद।। ३१ ।।**

हे मोमिनो! अब तुम सोकर क्या करोगे। इस कुरान और मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) की पहचान तुम्हें हो गई है। यह काजी बनकर न्याय करने बैठे हैं। अतः जिस रसूल मुहम्मद ने खुदा के आने की भविष्य-वाणी की थी, उनको बधाई दो।

**उठके आप खड़ी रहो, ल्यो अंग में आनंद।**
**इस्क देखाओ अपना, मासूक करो परसंद।। ३२ ।।**

हे मोमिनो! अब उठकर खड़े हो जाओ और अंग में बड़ी खुशी मनाओ। अब आपके बीच साक्षात् पारब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथजी आए हैं। अपने माशूक श्री प्राणनाथजी को इश्क (अंगना भाव) से रिझाओ।

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ ९६३ ॥

## सनन्ध–अब सो कहां है महंमद

**अब सो कहां है महंमद, तुम उठ क्यों न देखो जाग।**
**कह्या कौल सो आए मिल्या, अब नहीं नींद को लाग।। १ ।।**

श्री महामतिजी कहती हैं, हे मोमिनो! अब तुम उठकर खड़े हो जाओ और देखो। रसूल साहब ने खुदा के आने का जो वायदा किया था वह समय अब आ गया है, इसलिए अब सोने का समय नहीं है।

**तुम जो अरवाहें अर्स की, पर छलें किए हैरान।**
**बाहेर देखना छोड़ के, तुम अंतर करो पेहेचान।। २ ।।**

तुम अर्श के मोमिन हो। तुम्हें माया ने भटका रखा था। अब तुम बाहरी वजूद को देखना छोड़कर ज्ञान से उनकी पहचान करो।

**हकें लिख्या फुरमान में, मेरा अर्स मोमिन कलूब।**
**क्यों न जागो देख ए सुकन, दिल में अपना मेहेबूब।। ३ ।।**

हक (श्री राजजी महाराज ने) कुरान में लिखा है कि मेरा अर्श (ठिकाना) मोमिनों का दिल है। इन वचनों को सुनकर क्यों सावचेत (सतर्क) नहीं होते हो और जागकर क्यों नहीं अपने दिल में बैठे धनी को पहचानते हो।

**ए छल झूठा देख के, तुम लई जो तिनकी बुध।**
**तो नजर बाहेर पड़ गई, जो भूले अर्स की सुध।। ४ ।।**

इस झूठे संसार को देखकर तुमने माया की बुद्धि ले रखी है, इसलिए घर की सुध भूलकर बाहर की दृष्टि से देखने लगे हो।

**जात भेख ऊपर के, ए सब छल की जहान।**
**जो न्यारा मांहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान।। ५ ।।**

यह जाति और भेष सब छल वाली दुनियां के हैं। वह पारब्रह्म जो अन्दर और बाहर से न्यारा है, तुम उसकी पहचान करो कि वह कौन है।

Nijanand App